''21वीं सदी में नैतिकतापूर्ण, गुणवत्तापूर्ण व व्यक्तित्व–निर्माण केन्द्रित शिक्षा''

डॉ0 किरन गर्ग
असि0 प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग
दिगम्बर जैन कॉलिज, बड़ौत
बागपत, उ0प्र0
E-mail : gargkiran101@gmail.com

सारांशिका

'समस्याओं को रास्तों से निकाल दें चट्टान भी हो तो, ठोकर से उछाल दे।
रख हिम्मत तूफानों से टकराने की जरूरत नहीं है किसी मुसीबत से घबराने की।।

''दिमाग की दहलीज पर दस्तक मशीन की, ये झंकार है आधुनिकता की।'' दस में से आठ शहरी महिलाएँ, इंटरनेट का उपयोग कर रही है। दुनियाभर में आज अरबों लोग मोबाइल डिवाइस से जुड़े हैं। कृत्रिम, बुद्धि जो भावनाओं, विचारों को समझे और जिस काम को करने में आपको महीने लगते हो, उसे चंद मिनटों में ही पूरा करके दे दे। तो लगता है कि हाँ, दुनिया तरक्की कर रही है। हम बदल रहे हैं लेकिन किसी भी देश की प्रगति जनसाधारण की शिक्षा पर निर्भर करती है। शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण का आधार है जिसमें नैतिकता, गुणवत्ता समाहित है। इक्कीसवीं सदी की शिक्षा के मूलतः चार स्तम्भ है जिनमें पहला स्तम्भ–सीखने की कला, दूसरा–कार्यों को सर्वश्रेष्ठ ढंग से करना, तीसरा–अपनी क्षमताओं को पहचानना और चौथा–एक–दूसरे के साथ सौहार्द के साथ रहना। ऐसी स्थिति में प्रत्येक राष्ट्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति यहाँ की शिक्षा प(ति पर निर्भर करती है। वर्तमान में कला, वाणिज्य, विज्ञान, चिकित्सा आदि अनेक संकायों में विभिन्न संवर्गों में शिक्षा का गुणात्मक एवं संख्यात्मक प्रचार हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में या कम्प्यूटर शिक्षा से भारत विश्व का अग्रणी देश बन गया है। फिर भी एक कमी यह है कि यहाँ नैतिक शिक्षा पर उतना ध्यान नहीं दिया जा रहा है। परिणामस्वरूप भारतीय पीढ़ी सांस्कृतिक एवं कोरी भौतिकतावादी बन रही है। जबकि विद्यार्थी जीवन आचरण की पाठशाला है। हाँ वह अपने व्यक्तित्व एवं सुंदर चरित्र का निर्माण कर सकता है और देश में उच्च आदर्शों, श्रेष्ठ परम्पराओं एवं नैतिक मूल्यों की भी स्थापना कर सकता है। ऐसे में छात्रों के लिए नैतिक मूल्यों को जीवन में धारण करने की प्रेरणा देना, मूल्यांकन करना, आचरण एवं व्यावहारिक रूप में अमल करना, वर्तमान की आवश्यकता है। शिक्षा एक बीज है और जीवन वृक्ष है। जब तक हमारे जीवन रूपी वृक्ष पर नम्रता, ईमानदारी, सहनशीलता, आत्मनिर्भरता और शांति जैसे गुणरूपी फल नहीं आते तब तक हमारी शिक्षा अधूरी है।

''जो होता है गुणवत्ता में श्रेष्ठ, वही होता है सर्वश्रेष्ठ।''
छोटे–छोटे सुधार ही गुणवत्ता की ओर ले जाते है।।

मुख्य शब्द : नैतिकता, गुणवत्ता, व्यक्तित्व, निर्माण, शिक्षा, मूल्यांकन।

प्रस्तावना : भारतीय दर्शन इस धारणा पर आधारित है कि मानव का बौ(िक विकास अपने चरम बिन्दु पर पहुँच गया है। इसके आगे आन्तरात्मिक और आध्यात्मिक विकास होना चाहिए। यदि मानव इस दिशा में नहीं बढ़ता है तो वह पतन की ओर अग्रसर हो जायेगा। प्रत्येक मानव के अन्दर कुछ ईश्वर प्रदत्तदिव्य शक्तियाँ हैं। जो कुछ उसका अपना है, उसको ही पूर्णता की ओर अग्रसर किया जा सकता है। शिक्षा का कार्य इन्हें चिन्हित करना, विकसित करना और उपयोग में लाना है, और आत्मा की अन्तर्निहित शक्ति को पूर्णतः विकसित कर श्रेष्ठ कार्य हेतु तैयार करना है। शिक्षा सम्पूर्ण व्यक्तित्व के पुष्पन, पल्लवन एवं परिमार्जन का आधार है। अर्थात् शिक्षा ही वह नींव है जिस पर मानव जीवन के गुणवत्ता की आधारशिला टिकी होती है। मानव को सभ्य सुसंस्कृत और योग्य बनाने के लिए परिहार्य है कि उसे समग्र शिक्षा प्रारम्भ से हो जाए। 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने के लिए शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य छात्रों का चरित्र निर्माण करना है जिससे विद्यार्थियों के जीवन के सभी आयतों और पक्षों का सर्वश्रेष्ठ एवं संतुलित विकास हो सके। भारतीय दर्शन की परम्परा में भी चरित्र निर्माण और समग्र व्यक्तित्व विकास हेतु विद्या यानि शिक्षा को महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि शिक्षा व्यक्ति की भौतिकवाद चिंतन का समर्थन करती है। किन्तु साथ ही वह चारित्रिक, सांस्कृतिक सामाजिक मनोवैज्ञानिक सभी आयामों को भी प्रतिबिम्बित करती है।

नैतिकतापूर्ण शिक्षा : नैतिकता का आधार पवित्रता न्याय और सत्य है। अन्तरात्मा की सही आवाज ही नैतिकता है। समग्र शिक्षा से आशय है कि 'शिक्षा–दीक्षा' दोनों ही मिलकर एक पूर्ण शिक्षा का रूप प्रदान करती है।

शिक्षा : हममें वस्तुनिष्ठ ज्ञान से परिपूर्ण करता है, जो हमारे भौतिक जीवन के समस्याओं को सुलझाता है, तथा दीक्षाः– हमारे अन्तः व्यक्तित्व के जटिलताओं को परिष्कृत, परिमार्जित कर उत्कृष्टता के साँचे में ढालती है। जोकि हमारे जीवन का नैतिक एवं व्यावहारिक पक्ष है जिसके मूल्यों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है। शिक्षा में नैतिक में इस प्रकार है। जैसेः–

1. शिक्षा का अर्थ सीमित, संकीर्ण होता जा रहा है।

2. मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं, कर्तव्यों, निष्ठाओं व उच्चादर्शों का भीषण अकाल पड़ता जा रहा है।
3. शिक्षा नित्य नवीन प्रयोग एवं अनुभव के संक्रमण से गुजर रही है।
4. समाज और राष्ट्र की बुराइयाँ सुनामी का प्रलंयकारी रूप धारण कर रही है जिससे नैतिकता का हास हो रहा है। नैतिकता, व्यक्ति के अन्तःकरण द्वारा उचित–अनुचित का बोध है। नैतिक शिक्षा का उद्देश्य निस्वार्थ कार्य की प्रेरणा देना होता है। जिससे छात्रों में निस्वार्थ प्रेम, समाजसेवा की भावना उत्पन होती हो एवं सामाजिक बुराइयों का अंत होता हो। सच्चाई सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व की भावना एवं दूसरों के प्रति दयाभाव आदि नैतिक मूल्य की विशेषता है। जैसेः– न्यायप्रियता, स्वानुशासन, मित्रभाव, मानवतावाद लोकतन्त्रीय भावना, अंहिसा समुचित दृष्टिकोण को विकसित करना–

1. स्वयं तथा अपने साथियों के प्रति
2. स्वदेश के प्रति
3. मानवता के प्रति
4. सभी धर्मों एवं विभिन्न संस्कृतियों के प्रति
5. जीवन शैली एवं पर्यावरण के प्रति
6. छात्रों को स्वंय को जानने हेतु प्रोत्साहित करना एवं स्वयं में आस्था रखने में समर्थ बनाना।

नैतिक शिक्षण की कुछ विशेषताओं में नैतिक विचार–विमर्श, सहानुभूति, ज्ञान, तर्क, साहस और पारस्परिक कौशल, निष्पक्षता आदि शामिल है। जो व्यक्ति नैतिक व्यवहार का परिचय देते हैं, वही सही से काम भी करते है। नैतिक मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास हेतु उत्पन्न किये गए मूल्य है जोकि व्यक्ति के दैनिक जीवन का हिस्सा है और वे अपने व्यवहार को आकार देकर क्रिया–प्रतिक्रिया के रूप नैतिकता को परिभाषित करते है। नैतिकता मूल्यों और मानव व्यवहार का विश्लेषण और अध्ययन करती है जैसेः– ईमानदारी, सम्मान, एकता, सहयोग इन सभी के विकास हेतु शिक्षा की आवश्यकता होती है जो चार स्तम्भों पर आधारित है–

1. जीवन के लिए शिक्षा
2. करने के लिए शिक्षा
3. बनने के लिए शिक्षा
4. एक साथ जीने के लिए शिक्षा। सभी शिक्षा हमें पुरूषार्थ की ओर ले जाती है। जैसेः– एक व्यक्ति धन कमाना चाहता है तो कोई स्वास्थ्य पर ध्यान देता है, कोई चरित्र या कोई प्रसि(एवं प्रतिष्ठा को पाना चाहता है। नैतिकता का उद्दश्य व्यक्ति को इनके चरम मूल्यों से अवगत कराना है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षाः– 'जिसने पकड़ी गुणवत्ता की डोर, वही बढ़ा प्रगति की ओर।'' शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए जरूरी है कि शिक्षा के उद्देश्यों के निर्माण भौतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पर्यावरण के आधार पर किया जाए। सीखने के लिए उचित पर्यावरण का होना बहुत आवश्यक है और उसके लिए छात्रों के आस–पास का वातावरण अधिगम एवं शिक्षा के लिए अनुकूल बनाने अति आवश्यक है। गुणवत्तापूर्णता के निर्धारित तत्वों में पाठ्यक्रम, वातावरण, शिक्षक, छात्र, पाठ्यक्रम की शिक्षा में गुणवत्ता लाने का प्रमुख कारक माना जाता है। इसीलिए पाठ्यक्रम का निर्माण छात्रों के स्तर एवं समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप किया जाना चाहिए। साथ ही शिक्षा में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में संगीत कार्यक्रम, खेलकूद, गोष्ठी, पीटी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रतियोगिताओं एवं गतिविधियों को सम्मिलित किया जाना चाहिए। जिसके आधार पर समस्त शिक्षण कार्यो का क्रियान्वयन किया जाता है, जैसे क्या, कब और कैसे पढ़ाना है इसका निर्धारण पाठ्यक्रम द्वारा ही किया जाता है। पाठ्यक्रम जिसका अर्थ होता है– दौड़ का मैदान अर्थात छात्रों द्वारा इस रेस में प्रतिभाग करके समस्त कार्य पूरा करता है। जिससे कि शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है।

कनिंधम के अनुसारः– कलाकार शिक्षक के हाथ में यह पाठ्यक्रम एक साधन है जिससे वह पदार्थ शिक्षार्थी को अपने आदर्श उद्देश्य के अनुसार अपने स्टूडियो स्कूल में ढाल सके। अर्थात वह किसी उद्योग, व्यवसाय, ज्ञानोपार्जन, अभ्यास और शिक्षण क्रिया में सम्मिलित है। पाठ्यक्रम के द्वारा ही छात्रों के व्यक्तित्व का विकास किया जाता है। छात्रों के व्यवहार में बाहय परिवर्तन लाया जाता है और छात्रों में ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक कुशलताओं का विकास किया जाता है, जिसका उद्देश्य छात्रों का नैतिक, चारित्रिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सामाजिक भावनाओं का विकास करना है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में प्रायः उसी शिक्षा का समावेश होता है, जो शिक्षा शिक्षण–अधिगम में छात्रों की कमी एवं क्षमताओं को समझकर समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करें और छात्रों को जीविकोपार्जन योग्य बनायें। वही शिक्षा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मानी जाती है जो स्थायी हो और जिसका प्रयोग छात्र आवश्यकतानुरूप प्रयोग कर सके।

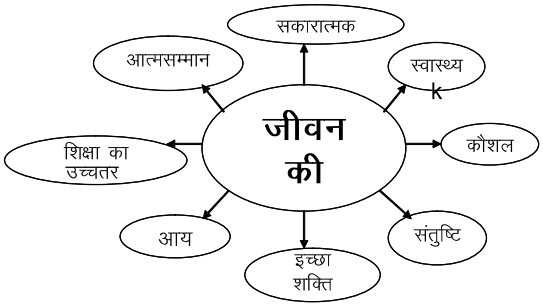

इस प्रकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु हम एक स्कूल समुदाय का निर्माण कर सकते हैं। जहाँ समुदाय के साथ अपने विचारों, चुनौतियों और अवसरों पर विचार कर सकते हैं। क्या सुधार करना है ? कितनी प्रगति हो रही है, उपलब्धि स्तर क्या है? यही प्रतिक्रियाएं शिक्षा की गुणवत्ता हेतु आवश्यक है। इसीलिए शैक्षिक संस्थानों के विभिन्न आयामों में निरन्तर मूल्यांकन किये जाने की आवश्यकता है। इससे संस्थानों की जवाबदेही पर नियन्त्रण की बना रह सकता है।

व्यक्तित्व निर्माण केन्द्रित शिक्षाः– शिक्षा से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है। शिक्षा ज्ञान प्रदान करती है, और सर्वागीण विकास ज्ञान से ही संभव है। हर बालक एक पत्थर की

तरह होता है जिसके अंदर एक खूबसूरत मूर्ति होती है। माता–पिता और समाज का कर्तव्य इसे एक सुंदर व्यक्तित्व प्रदान करना होता है। यह कदम बच्चों को आत्मनिर्भर तो बनायेगा ही साथ ही वह एक बेहतर राष्ट्र, आनुवंशिकता और पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान दे सकेगा। शिक्षक अपने छात्रों की जरूरतों की पूर्ति करके एवं उनकी कमजोरियों को दूर करने में मदद करके उनके प्रदर्शन में अंतर ला सकते है। कठिन परिश्रम हेतु प्रेरित करके उनके आत्मविश्वास को बढा सकते है। ऐसे में शिक्षक के व्यक्तित्व में जूनून, धैर्य, सहयोगी और आधिकारिक होने के सकारात्मक लक्षण है तो वह एक सफल शिक्षक बन सकेगा और वह अपने छात्रों की जिज्ञासा रूपी पिपासा भी संतुष्ट कर सकते है। इस प्रकार शिक्षा आपके लिए अवसर और अनुभव दे सकती है। अवसर को आपके व्यक्तित्व को प्रदर्शित करने का एक तरीका माना जा सकता है। अवसर आपको अनुभव देते हैं और अनुभव आपको अधिक अवसर देता है और जीवन में कुछ नई चीजें भी सीखा जाते हैं। अवसर और अनुभव आपको व्यवहार करना सीखा सकता है। सही–गलत, शुभ–अशुभ, नैतिक–अनैतिक में भेद समझाता है। ये सभी बातें व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। जैसे – इस चित्र में प्रदर्शित होता है।

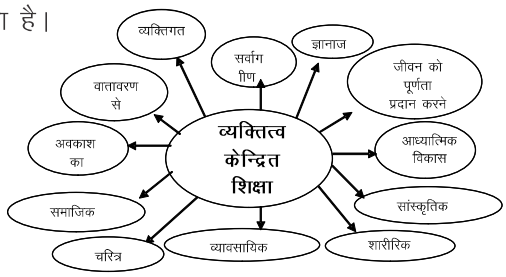

एक उत्कृष्ट सोच कौशल से स्वस्थ विचार–विमर्श होगा और आपका अविस्मरणीय व्यक्तित्व का निर्माण भी होगा जिसके लिए अनुशासन की हम अनदेखी नहीं कर सकते हैं। अनुशासन जीवन की सफलता और श्रेष्ठता और बेहतर सांसारिकता हेतु अति महत्वपूर्ण हैं। अच्छा व्यक्तित्व हर कोई पसन्द करता है। लेकिन इसे पलक झपकते ही नहीं बनाया जा सकता है। इसके लिए समय, सहिष्णुता, अनुशासन, धैर्य, नियम और परिश्रम से काम करने की आवश्यकता है। यह एक पौधे की तरह है फल पाने के लिए आपको पौधे की तरह पोषण देने की जरूरत है। ज्ञान, अनुभव एवं अवसर के साथ सकारात्मक दृष्टिकोण एवं अनुशासन जादूई कड़ी का काम करते हैं। यह सब अच्छी शिक्षा द्वारा ही संभव हो सकता है। इस प्रकार जो व्यक्ति अपने आचरण, व्यवहार, शिक्षा, योग्यता, शालीनता, पोशाक, उदारता, त्याग, क्षमा, सहिष्णुता एवं बौ(िकता जैसे तत्वों को अपनाकर अपनी छवि को अन्य की अपेक्षा अलग प्रस्तुत करता है, इसे ही व्यक्तित्व निर्माण कहा जाता है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 शंकर दयाल शर्मा ने कहा था– ''किसी शिक्षित चरित्रहीन व्यक्ति की अपेक्षा एक अशिक्षित चरित्रवान व्यक्ति समाज के लिए अधिक उपयोगी होता है अर्थात जीवन के समस्त गुण, ऐश्वर्य, समृद्वियाँ एवं वैभव की आधारशिला सदाचार है, सच्चरित्रता है।'' जो व्यक्ति को जीवन जीने की कला सिखाती है। ''शिक्षा भविष्य का पासपोर्ट है, कल के लिए जो आज इसकी तैयारी करते हैं। शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। एक शिक्षित व्यक्ति का हर जगह सम्मान किया जाता है। शिक्षा सुंदरता और युवाओं को हरा देती है क्योंकि एक पढ़ा लिखा दिमाग हमेशा जवाब से ज्यादा सवाल करता है।

निष्कर्ष : ''असतो मा सदमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृत गमय।'' अर्थात् विद्या से मनुष्य की बु(के गवांक्ष खुलते हैं और उन गवाक्षों से ज्ञान के प्रकाश की किरणें अन्दर प्रवेश करती हैं। लेकिन पश्चिम से प्रभावित जीवनशैली, तकनीकी के गिलाफ में सिमटती हुई जिन्दगी, वास्तविक जीवन की अपेक्षा वर्चुअल लाइफ और इंटरनेट मीडिया का बढ़ता वर्चस्व, शारीरिक और परिश्रम आधारित गतिविधियों के स्थान पर सोशल मीडिया प्लेटफार्म में उलझती जा रही है। इसका दुष्परिणाम यह है कि व्यक्ति के ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण, जो स्वयं उनके लिए ही नहीं, अपितु परिवार, समाज और देश के लिए भी विभिन्न आयामों पर हानिकारक साबित हो रही है।

शिक्षा के धरातल पर इन्हीं चुनौतियों से निपटने हेतु एक सुचिंतित, सुविचारित और दूरगामी प्रयास के रूप में नई शिक्षा नीति 2020 मूल्य संवर्धन, कौशल आधारित समग्र दृष्टिकोण से परिपूरित पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया। सम्पूर्ण देश के विशेषज्ञों की सहायता से तैयार इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण एवं सामुदायिक कार्यों का विकास करना है।

यह पाठ्यक्रम हमारे युवाओं में सामाजिक दायित्व का बोध और सेवाभाव, आत्मनिर्भरता के साथ देशप्रेम का भाव भी विकसित करेंगे। 21वीं सदी में विश्व में परचम लहराने को तैयार युवाओं का नया भारत आर्थिक सशक्तीकरण की तैयारी के साथ ही नैतिकतापूर्ण, गुणवत्तापूर्ण व व्यक्तित्व निर्माण केन्द्रित शिक्षा युवाओं को एक नई दिशा देने का कार्य करेगी। इसीलिए शिक्षा को श्रेष्ठ बनाने हेतु देश में शैक्षिक जागरूकता का प्रसार करने की आवश्यकता है। इसलिए सबको शिक्षा की गुणवत्ता, नैतिकता और व्यक्तित्व निर्माण की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

सन्दर्भ सूची :

- वंदना वर्मा (2020) शिक्षा और व्यक्तित्व विकास में इसकी भूमिका (Satayeducation.in)
- Ferguson, T.Lisko, S, Roofe, C. and Hill.S. (2018). Refrences SDGH-Quality Education.
- Jyothi Gosala (2019), Importance of personality development in a student's life. (Hans News Services) www.thehansindia.com
- Kiran Garg – (2020) Pankhuri an Interdisciplinary Journal. (Journalpanbhuri.in)
- Prabhat Kumar Sharma – (2022) Qualitative research Pribliometric analysis – Dayal Bagh, Agra.
- India – The NCF – 2005 URL – https://www.ncert.nic.in/rightside/links/pdf/english.
- Digital Promise on Internet.
- Shodganga@INFLIBNET-centre-
- www.http://shodhganga.inflibnet.ac.in
- www.leverageedu.com.(2022)
- Google
- Wikipedia
- Newspaper and Articles in different books.